ग़ज़ल संग्रह

ग़ज़ल गुंजन

डॉ.अजय पाण्डेय 'बेबस'

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

ग़ज़ल गगन

(ग़ज़ल संग्रह)

अजय पाण्डेय 'बेबस'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश 481331

978-93-94528-46-8

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरु चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

मोबाईल-9009423393

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2026, अजय पाण्डेय बेबस

मूल्य- 200/- रुपये

मुद्रक– सोनी प्रिंटकॉम, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY AJAY PANDEY

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

रचना मेरे लिए केवल शब्दों की सजावट नहीं, बल्कि समाज से जुड़ने का एक सशक्त माध्यम है। गीत, ग़ज़ल, कविता, मुक्तक और कहानियाँ लिखने का मेरा मूल उद्देश्य लोक-जागरण के साथ-साथ अपनी भाषा और संस्कृति का संरक्षण एवं विकास करना है। बदलते समय में जब शब्दों की सरलता और भावों की सच्चाई पीछे छूटती जा रही है, तब मेरी यह कोशिश रही है कि रचनाएँ सहज हों, भावपूर्ण हों और आम पाठक तक बिना किसी बोझ के पहुँच सकें।

मैंने सदैव यही चाहा है कि मेरी रचनाएँ पढ़कर पाठक केवल अर्थ ही न समझें, बल्कि उनमें छिपी संवेदना को भी महसूस कर सकें। जीवन के छोटे-छोटे अनुभव, समाज की सच्चाइयाँ, मानवीय रिश्तों की गहराई और लोकजीवन की धड़कन—इन सबको सरल शब्दों में प्रस्तुत करना ही मेरी लेखनी का स्वभाव रहा है। जटिलता से दूर, सीधी और आत्मीय भाषा में कही गई बात अधिक दूर तक जाती है—इसी विश्वास के साथ ये रचनाएँ सामने आई हैं।

यह पुस्तक केवल मेरा सृजन नहीं, बल्कि उन मूल्यों की अभिव्यक्ति है जो मैंने अपने जीवन में देखे, सीखे और जिए हैं। मेरी समस्त रचनाएँ मेरे स्वर्गीय पिता द्वारिकानाथ पाण्डेय एवं स्वर्गीय माता जगदंबा देवी की पुण्य स्मृति को समर्पित हैं। उनका संस्कार, उनका स्नेह और उनकी सीख ही मेरी लेखनी की वास्तविक प्रेरणा है।

आशा है कि यह कृति पाठकों के मन को छुएगी, उन्हें सोचने का एक नया दृष्टिकोण देगी और लोकहित में एक छोटा-सा सार्थक प्रयास सिद्ध होगी।

— अजय पाण्डेय 'बेबस'

2122/2122

बेवजह तकरार करते।
झूठ के सरकार करते।।

मुफलिसी के नाम से है।
लोग कारोबार करते।।

झूठ की दुनिया हमारी।
रात दिन व्यभिचार करते।।

दुश्मनों से दोस्ती कर।
पाक रिश्ता खार करते।।

दिल गरीबों का दुखाकर।
घर उजाला यार करते।।

बेबसी की देख दुनिया?
खुद को ही बीमार करते।।

1222/1222/12

कभी सपनों बुलाया भी करें।
मुहब्बत ये निभाया भी करें।।

जमाने से रहे रिश्ता सदा।
बसर अपना बताया भी करें।।

भुलाकर गम जमाने की खुशी।
कभी हँसना हँसाया भी करें।।

जमाना जान जाए आपको।
किसी से दिल लगाया भी करें।।

गमों की जिन्दगी बेकार है।
मिले पल मुस्कुराया भी करें।।

न जीयें बेबसी की जिन्दगी ।
नई खुशियाँ लुटाया भी करें।।

2212/2212/2

पगले सनम की बात करते।
अगले जनम की बात करते।।

सदियों से है ऐसी कहानी।
इश्क में कसम की बात करते।।

सपने सजाना और हँसना।
अपने करम की बात करते।।

ये इश्क मोहब्बत अमानत।
सपनों वहम की बात करते।।

अपनी नई दुनिया बसाने।
खुद पर रहम की बात करते।।

दुनिया हमारी *बेबसी*की।
क्यूँ जो फहम की बात करते??

2122/2212

पास आओ बैठो जरा।
हाल मेरा जानो जरा।।

बिन तुम्हारी ये जिन्दगी ।
चलती कैसी पूछो जरा।।

इश्क मोहब्बत बंदगी।
यार तुम ये सीखो जरा।।

खूबसूरत ये दोस्ती।
आज पक्की कर लो जरा।।

बेबसी की दुनिया नहीं।
आदमी क्या पढ़ लो जरा।।

जिन्दगी मेरे नाम की।
कुछ घड़ी का कर लो जरा।।

2122/1222/2122/2

आप मिलती नहीं,सबकी ये शिकायत है।
बेवजह आपकी भी किससे अदावत है??

आप जीती रहीं हैं भी दूर अपनों से।
भूल खुशियाँ हमारी कैसी बगावत है??

आपसा खूबसूरत कोई नहीं यारा।
आप पर तो खुदा की रहती इनायत है।।

चेहरे पर उदासी अच्छी नहीं लगती।
आपसे ही मुहब्बत की भी हिफाजत है।।

दोस्ती और यारी में मुस्कुराना हो।
दोस्तों से हमारी खुशियाँ सलामत है।।

बेबसी दूर कर खुद में मुस्कुराना हो।
आपसे आज की खुशियाँ हैं मुहब्बत है।।

212/212/212/22

आदमी बन कभी रह लिया जाए।
झूठ सच क्या,समझ चल लिया जाए।।

बेवजह रूठकर भी करेंगे क्या?
बात अपनों की है,सुन लिया जाए।।

खूबसूरत हमारी नई दुनिया।
कौन अपना यहाँ,चुन लिया जाए।।

रख भरोसा नये इस जमाने पर।
कुछ नया काम भी कर लिया जाए।।

दोस्ती और यारी जमाने की।
साथ लेकर सदा चल लिया जाए।।

बेबसी की न हो जिन्दगी कोई!
दोस्तों के शहर रह लिया जाए।।

2122/2212/212

खूबसूरत दुनिया हमारी रहे।
बीच अपनों खुशियाँ हमारी रहे।।

कुछ दिनों की जिन्दगी ये यार है।
एक रौशन गलियाँ हमारी रहे।।

दोस्ती यारी आज की बंदगी।
आदमी की छवियाँ हमारी रहे।।

इश्क मोहब्बत जिन्दगी की खुशी।
प्यार सबसे बढ़िया हमारी रहे।।

रोज का हँसना मुस्कुराना यहाँ।
खूबसूरत सदियाँ हमारी रहे।।

बेबसी का रोना भुलाकर कभी।
मुस्कुराती कलियाँ हमारी रहे।।

2122/2212/2

रोज खुशियाँ बर्बाद करते।
झूठ के मुर्दाबाद करते।।

एक डर की दुनिया हमारी।
बेवजह दुश्मन धात करते।।

जान के दुश्मन बन चले जो।
हर किसी से तकरार करते।।

चैन खोकर जीते रहें हम।
दुश्मनों पर क्या वार करते??

मर रहा सैनिक रोज कोई।
काम ऐसा गद्दार करते।।

जंग जबतक होती रहेगी।
जय का कैसे हम नाद करते??

2212/2122/2212

सपनों के गुलशन में आया तो कीजिए।
ख्वाबों के नग्में सुनाया तो कीजिए।।

कोई नहीं आपसा यारा भी यहाँ।
नजरों मुहब्बत निभाया तो कीजिए।।

दुनिया हमारी-तुम्हारी की यार है।
खुशियाँ हमीं से लुटाया तो कीजिए।।

हम आपको देख जीवन जीते यहाँ।
मेरी खुशी मुस्कुराया तो कीजिए।।

लिखते रहे प्यार के जो अल्फाज हैं।
ये कौन लिखता,बताया तो कीजिए।।

आँखों रही बेबसी क्या वो समझ।
अपनों के महफिल बुलाया तो कीजिए।।

212/212/212/22

जिन्दगी से हटाए नहीं जाते।
भूलकर भी भुलाए नहीं जाते।।

दोस्ती और यारी खुशी अपनी।
चाहतें क्या,बताए नहीं जाते।।

खूबसूरत जमाना दिवानों का।
ऱाज दिल का छुपाए नहीं जाते।।

इश्क की जिन्दगी, इश्क की दुनिया ।
चीखकर ये सुनाए नहीं जाते।।

आज दुनिया हमारी मुहब्बत की।
हर किसी से निभाए नहीं जाते।।

बेबसी क्या, समझता नहीं कोई?
क्या करें,दुख गिनाए नहीं जाते।।

122/122/122/122

जो होती शिकायत तो,मिलते न तुमसे।
मिलाकर कदम,साथ चलते न तुमसे।।

हमारी तुम्हारी नई ये मुहब्बत ।
न होती मुहब्बत तो हँसते न तुमसे।।

तुम्हें भूल औरों की होती इबादत।
कभी प्यार की बात करते न तुमसे।।

तुम्हें देखकर मुस्कुराना रहा है।
है जो राज अपना, ये कहते न तुमसे।।

तुम्हारी अदा पर तो दुनिया दिवानी।
जमाने की है सोच,छुपते न तुमसे।।

मुहब्बत कभी बेबसी की न होती।
किसी और के नग्में सुनते न तुमसे।।

212/2122/1222

आपको तो खुदा ने तराशा है।
खूबसूरत हुस्न से नवाजा है।।

चाँद तारे सभी आपसे जलते।
रूप रंग दे खुदा ने संवारा है।।

यूँ नहीं लोग दीदार को मरते।
सोच कोई जमी पर उतारा है।।

आपका एक दीदार को तरसे!
खूबसूरत वो दुनिया हमारा है।।

रोज आती रहें रात सपनों में।
प्यार की बात है,दिल पुकारा है।।

जिन्दगी बेबसी की नहीं यारा।
आदमी भी कहाँ अब बिचारा है।।

2122/2122

जिन्दगी गुलजार तुमसे।
हाँ मुझे है प्यार तुमसे।।

चार दिन की जिन्दगी है।
क्यूँ करें तकरार तुमसे??

हुस्न की दुनिया दिवानी।
अब न करना रार तुमसे।।

इश्क -मोहब्बत -इबादत।
ख्वाब का संसार तुमसे।।

संग जीना और मरना।
सज रहे घर बार तुमसे।।

बेबसी अपनी भुलाकर।
कर रहा इजहार तुमसे।।

2122/2122/2122

राज दिल का वो छुपाते भी रहे हैं।
दूर रह मुझको सताते भी रहे हैं।।

दोस्ती यारी हमारी खूबसूरत।
बीच अपनों ये निभाते भी रहे हैं।।

दुश्मनों से आज नाता जोड़कर वो।
बेवजह में आजमाते भी रहे हैं।।

चाँद तारे भी नहीं अपने हमारे।
रात में आकर जगाते भी रहे हैं।।

खूबसूरत हो चली है दोस्ती में।
नींद आँखों से चुराते भी रहे हैं।।

*बेबसी*का है नहीं रिश्ता हमारा।
आज पर आँखें चुराते भी रहे हैं।।

2122/2212/22

बेवजह अपना दिल दुखाना क्या??
दूर रहकर आँसू बहाना क्या??

दोस्ती यारी बंदगी मेरी।
रह अकेले,खुशियाँ लुटाना क्या??

खूबसूरत दुनिया हमारी ये।
भूल सबको पीछा छुड़ाना क्या??

मुस्कुराना ये जिन्दगी अपनी।
दुश्मनों से रिश्ता निभाना क्या??

संग साथी सभी काम के होते।
लोग अपनों को भी भुलाना क्या??

बेबसी की दुनिया न हो जाए।
राज मोहब्बत का छुपाना क्या??

2122/2212/22

आदमी हो तो मुस्कुराया कर।
संग रह अपनों को हँसाया कर।।

कुछ दिनों की जिन्दगी सबकी।
लोग अपनों को मत सताया कर।।

हौसले की हो जिन्दगी तेरी।
काम भर तो दौलत कमाया कर।।

जिन्दगी यह खुशहाल हो तेरा।
एक सपनों का घर बसाया कर।।

मौत को आना है तो आएगी।
काम से तो दिल मत चुराया कर।।

बेबसी की तेरी न हो दुनिया।
पाक दिल से,रिश्ता निभाया कर।।

2122/2212/2122/2

दिल चुराकर नजरें चुराया नहीं करते।
बेवजह अपनों को डराया नहीं करते।।

दोस्ती-यारी आज की बंदगी सबकी।
रात सपनों आकर सताया नहीं करते।।

चार दिन की है जिन्दगी में रहे हँसना।
घर बुलाकर,घर से भगाया नहीं करते।।

इश्क मोहब्बत ये सियासत नहीं कोई।
यार दोस्त को आजमाया नहीं करते।।

बेबसी की है जिन्दगी अब नहीं जीना।
भूल अपनों को दिल दुखाया नहीं करते।।

लोग अपनों की जिन्दगी खूबसूरत हो।
जान परिचय कर फिर भुलाया नहीं करते।।

2122/22/22

मुफलिसी में प्यार मुहब्बत ।
आज के पल एक अदावत।।

जिन्दगी दौलत वालों की।
है गरीबी खुद में आफत।।

लूट लेता महफिल कोई।
हुस्न की ये राज सलामत।।

उलझे जो प्यार मुहब्बत में।
हो चलेंगे यार बगावत।।

बेबसी की दुनिया जिनकी।
इश्क उनका एक इबादत।।

खूबसूरत दुनिया तेरी।
बीच अपनों में रख कुर्बत।।

2122/1222/2

रात सपनों में आना उनका।
नींद टूटे कि जाना उनका।।

खूबसूरत लगे दुनिया में।
बेवजह ये सताना उनका।।

भूल जाते रहे खुशियों को।
दूर जो है दिवाना उनका।।

रो रही जिन्दगी मेरी है।
अब न भाए रिझाना उनका।।

कुछ नई है कहानी जैसी।
लिख रहा हूँ फसाना उनका।।

बेबसी की हुई दुनिया में।
है गजब दिल लुटाना उनका।।

2122/2122/2122

देख सपना दिल लगाना तो रहेगा।
इश्क मोहब्बत निभाना तो रहेगा।।

यार का दीदार कर हम मुस्कुराएँ।
प्यार में खुशियाँ लुटाना तो रहेगा।।

दोस्ती -यारी -मुहब्बत बंदगी में।
चाँद बनकर दिल चुराना तो रहेगा।।

यूँ गुजर जाए न मेरी जिन्दगी ये।
रात सपनों में बुलाना तो रहेगा।।

कुछ दिनों की जिन्दगी सबकी हमारी ।
गीत नग्मों से रिझाना तो रहेगा।।

बेबसी की कोई न हो खुशियाँ हमारी।
यार से आँखें मिलाना तो रहेगा।।

2122/2122/22

खूबसूरत दिल मुहब्बत चाहिए।
जिन्दगी यह खूबसूरत चाहिए।।

मुस्कुराहट की रहे ये जिन्दगी ।
दोस्ती-यारी-इबादत चाहिए।।

इस जमाने का हमारा प्यार है।
प्यार मेरा ये सलामत चाहिए।।

आपके दीदार में मिलती सुकूँ।
ख्वाब का ऐसा ही उल्फत चाहिए।।

रात तारे भी हमारे साथ हों।
आप सबकी ये इनायत चाहिए।।

बेबसी की जिन्दगी से रह अलग।
लोग अपनों से बजाहत चाहिए।।

2212/2122/22

सबके दिलों रह दिखाना सीखें।
खुशियों की दुनिया सजाना सीखें।।

दुश्मन हुई आज की दुनिया है।
अब दुश्मनों को भगाना सीखें।।

जीना हमें चार दिन ही है।
दिल को बड़ा कर हँसाना सीखें।।

दुनिया दिवानी मुहब्बत की है।
अपनों मुहब्बत निभाना सीखें।।

गुलशन सजाएँ सदा खुशियों की।
आँखों उदासी हटाना सीखें।।

यूँ दूर कर बेबसी को यारा।
दिलबर दिलों,दिल चुराना सीखें।।

2122/2122/22

चाँद बनकर मुस्कुराना भी है।
दिल चुराकर दिल दुखाना भी है।।

आज की दुनिया मुहब्बत ऐसी।
ख्वाब की खुशियाँ लुटाना भी है।।

ये गजब की जिन्दगी है सबकी।
वक्त अपनों में बिताना भी है।।

जो मुकम्मल है नहीं सपनों में।
दोस्ती उनसे निभाना भी है।।

बेबसी सबकी यही,क्या कहिए?
जिन्दगी से डर भगाना भी है।।

देख अपनी खूबसूरत दुनिया ।
प्यार सबसे आजमाना भी है।।

1222/1222/2

मुहब्बत है,बगावत भी है।
जमाने से अदावत भी है।।

वकीलों से सजी महफिल में।
हिदायत है,जलालत भी है।।

सुकूँ की जिन्दगी में जैसे?
शिकायत है,हरारत भी है।।

निभाए क्या मुहब्बत कोई?
निभाने का नदामत भी है।।

हमारे इश्क मोहब्बत से।
मजा लेती अदालत भी है।।

हमारी बेबसी हम जानें।
कहाँ करते शिकायत भी है??

221/2122/221/2122

सपनों हुई मुहब्बत में,याद कर चले हैं।
इंतजार में तुम्हारी, हम शाम कर चले हैं।।

सदियों से है मुहब्बत की बंदगी हमारी।
रिश्ता नया पुराना का मान कर चले हैं।।

हर रात की उदासी मुझको बहुत सताए।
बिन आपके ये खुशियाँ बेजान कर चले हैं।।

तेरे बिना मुश्किलों की जिन्दगी हमारी।
बेकार में कहीं एक मकान कर चले हैं।।

यूँ भूल मत रहो मुझको यार जिन्दगी में।
क्यूँ जान बूझ दुनिया अंजान कर चले हैं।।

मेरी है बेबसी में भूलों न ख्वाब अपना।
तुमसे रही मुहब्बत में शान कर चले हैं।।

1222/1222/122

मुहब्बत है नहीं तो, फिर गिला क्या?
अदावत है नहीं तो ,फिर सजा क्या??

बदलते लोग में,दुनिया बदलती।
हमारे लोग बदले तो हुआ क्या??

किसी की शान झूठी में मान झूठी।
हमें भी भूलकर,तुमको मिला क्या??

मुकम्मल प्यार भी होता नहीं में?
किसी में ढूँढ़ते हम भी वफा क्या??

हमारी जिन्दगी यूँ खूबसूरत ।
जहाँ का दिल दुखाने में मजा क्या??

हमारी जिन्दगी कोई नहीं में।
नया रिश्ता बनाना तोड़ना क्या??

212/212/212/212

देश के दुश्मनों को भगाना रहे।
दुश्मनों से जहाँ को बचाना रहे।।

देश का एक सैनिक रहा आदमी।
हर घड़ी देश खातिर वो जीता रहे।।

रोज हम ले रहे चैन की नींद है।
आँख वह दुश्मनों को दिखाता रहे।।

जान से भी बड़ा देश है सोचकर।
आदमी आदमी को जगाता रहे।।

मार दुश्मन सभी को बड़ा वीर वो।
वीरता की कहानी सुनाता रहे।।

हम नमन कर रहे उनको जो हँस मरे।
देश के वो हमारे विधाता रहे।।

2122/2122/2122

दुश्मनों से मिल रहे गद्दार दिखते।
हर किसी के हैं शहर मक्कार दिखते।।

देश मानो दुश्मनों से घिर चला हो।
दुश्मनों के सज रहे दरबार दिखते।?

जिन्दगी सबकी मुसीबत की रही है।
आदमी अपनों से है लाचार दिखते।।

कौन अपना,कौन हो सकता पराया।
लोग के अच्छे नहीं व्यवहार दिखते।।

बेवजह की दुश्मनी से आदमी भी।
जिन्दगी को कर चले अंधार दिखते।।

बेबसी की दुनिया, भूले मुस्कुराना।
अब जिधर भी देखूँ,खर पतवार दिखते।।

2212/2122/212

खुद के लिये मुस्कुराना चाहिए।
आँखों खुशी ये दिखाना चाहिए।।

ये जिन्दगी कुछ दिनों की यार है।
खुशियों का गुलशन सजाना चाहिए।।

करके कभी जिन्दगी से दोस्ती।
हर पल की खुशियाँ बुलाना चाहिए।।

अपना यहाँ कौन रहता है?
दुनिया जहाँ को बताना चाहिए।।

यूँ भूल सब,जिन्दगी की बेबसी।
दीन दुखियों को हँसाना चाहिए।।

सबके दिलों है मुहब्बत बंदगी।
अपनों यही अब निभाना चाहिए।।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान, है प्रमाण देशभक्ति का... आइए करें सृजन, शब्द से शक्ति का...

नाम- डॉ. अजय किशोर नाथ पाण्डेय 'बेबस'

पिता- स्व. द्वारिकानाथ पाण्डेय

जन्मतिथि- 12 जनवरी 1962

शिक्षा - बी0 ए0 (आनर्स)

विद्या - कहानी, कविता, गीत-गजल, शेर आदि लेखन कार्य के अतिरिक्त पेंटिंग, तथा सामाजिक कार्य में रुचि, छंद मुक्त रचना के प्रति अभिरुचि।

सम्मान- पेंटिंग एवं लेखन में कई संस्थाओं के साथ राज्य स्तरीय पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त।

उपलब्धि- 10 से अधिक एकल संग्रह एवं साझा संग्रह प्रकाशित, जिला एवं राज्य स्तरिय कार्यक्रमों मे जज की भूमिका। नागपुरी की कविताऐं स्कुल एवं कालेज के पाठ्यक्रमों में शामिल।

पता- चेटर, पोस्ट-जिला -गुमला
झारखंड, पिन 835207
व्हाट्सअप मो0 नं0 91101950180

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

978-93-94528-46-8

मूल्य- 200/-

15, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331, मो.- 9009423393, ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com